व्हाइट हाउस में इफ़्तार के अवसर पर राष्ट्रपति ओबामा

व्हाइट हाउस
प्रेस सचिव का कार्यालय
10 अगस्त, 2011

इफ़्तार रात्रिभोज के दौरान राष्ट्रपति का व्यक्तव्य

ईस्ट रूम
सायं 8.35 ईडीटी

राष्ट्रपति: धन्यवाद. बहुत धन्यवाद. (तालियां.) सभी, कृपया अपना स्थान ग्रहण करें, बिराजिये.

सभी को गुड इवनिंग और व्हाइट हाउस में आपका स्वागत है. आज की रात अनेक धर्मों के पवित्र दिवसों के मनाने और उस विविधता को सम्मानित करने की व्हाइट हाउस की समृद्ध परंपरा का अंग है जो एक राष्ट्र के रूप में हमें परिभाषित करती है. इस तरह से ये सर्वोत्कृष्ट अमेरीकी समरोह हैं - विभिन्न आस्थाओं वाले लोग, अपने सृजनकर्ता के सम्मुख पूर्ण विनम्रता के साथ, एक दूसरे के साथ एकत्र हो कर एक दूसरे के प्रति अपने दायित्वों की पुन: पुष्टि करते हैं, क्योंकि हम चाहें जो भी हों, या चाहे जैसे भी पूजा-अर्चना करते हों, हम सभी एक प्यार करने वाले ईश्वर की संतान हैं.

अब, इस वर्ष पूरा रमादान अगस्त महीने में पड़ा है. इसका अर्थ यह हुआ कि दिन लम्बे हैं, मौसम गर्मी का है, और आप को भूख लगी है (हंसी). लिहाज़ा मैं अपनी बात संक्षेप में ही कहूंगा.

मैं राजनयिक दल के उन सदस्यों का जो यहां उपस्थित हैं; संसद सदस्यों का, जिनमें संसद के दो मुस्लिम अमेरिकी सदस्य-- कीथ एलीसन और आंद्रे कार्सन शामिल हैं; और नेताओं तथा अपने प्रशासन भर से आये अधिकारियों का स्वागत करना चाहता हूं. यहां आने के लिए आप सबका धन्यवाद. कृपया इन सबके लिए ज़ोरदार तालियां बजायें. (तालियां)

अमेरिका भर के लाखों मुस्लिम अमेरिकियों के लिए और -- विश्व भर के सौ करोड़ से भी अधिक मुसलमानों के लिए, रमादान चिंतन का समय है और भक्ति-भावना का समय है. यह परिवार और मित्रों के साथ मिलकर उस धर्म का उत्सव मनाने का अवसर है जो अपनी विविधता और न्याय के प्रति तथा सभी मानवों की गरिमा के प्रति अपनी वचनबद्धता के लिए विख्यात है. तो आप के और आपके परिवार के लिए रमादान करीम.

आज की यह शाम एक महान धर्म के सतत पाठों और एक महान राष्ट्र की टिकाऊ शक्तियों दोनों की याद दिलाती है. इतने सारे धर्मों के तरह, इस्लाम भी हमेशा से हमारे अमेरिकी परिवार का अंग रहा है, और

मुस्लिम अमेरिकीयों ने लम्बे समय से, जीवन के हर क्षेत्र में, हमारे देश की शक्ति और चरित्र में योगदान दिया है. यह बात पिछले दस वर्षों में विशेष रूप से सही रही है.

एक महीने में, हम उन भयानक हमलों की दसवीं वर्षगांठ मनायेंगे जिन्होंने हमारे दिलों को इतना दुख पहुंचाया. वह समय होगा उन सब लोगों को सम्मान देने का जिन्हें हमने खो दिया, उन परिवरों को जो उनकी विरासत को क़ायम रखे हुए हैं, उन वीरों को जो उस दिन मदद के लिए दौड़ पड़े, और उन सबको जिन्होंने इस कठिन दशक में हमें सुरक्षित रखने के लिए अपनी सेवाएं दी हैं. और आजकी रात, यह याद रखने वाली बात है कि ये अमेरिकी अनेक आस्थाओं और पृष्ठभूमिओं वाले लोग थे, जिनमें गर्वीले और देशभक्त मुस्लिम अमेरीकी भी शामिल थे.

उन विमानों पर सवार निर्दोष यात्रियों में मुस्लिम अमेरीकी भी थे, जिनमें एक युवा विवाहित जोड़ा भी शामिल था जो अपने पहले बच्चे के जन्म लेने की बाट जोह रहा था. उन जुड़वां गगनचुंबी अट्टालिकाओं में काम करनेवाले लोग थे-- जन्म से अमेरिकी और स्वेच्छा से अमेरिकी, और वे आप्रवासी जो समुद्रों को लांघ कर आये थे ताकि अपने बच्चों को बेहतर जीवन दे सकें. उनमें वेटर और बावर्ची थे, तो साथ ही विश्लेषक और वरिष्ठ अधिकारी भी.

वहां, उन अट्टालिकाओंमें जहां वे काम करते थे, वे दैनिक पूजा-प्रार्थना के लिए एकत्र होते और इफ़्तार के भोजन के लिए. वे भविष्य की ओर निहार रहे थे -- विवाह के बंधन में बंधना, अपने बच्चों को कॉलेज भेजना, उस रिटायरमेंट का आनंद लेना जिसका उन्हें पूरा हक था. और उन सबको हमसे बहुत जल्दी छीन लिया गया. और आज, वे जीवित हैं अपने परिवारों के स्नेह और प्रेम में, और एक ऐसे राष्ट्र की स्मृति में जो उन्हें कभी नहीं भूलेगा. और आज रात, हम गहन रूप से आभारी हैं कि 9/11 के उन परिवारों में से कुछ हमारे साथ हैं, और मैं उनसे अनुरोध करूंगा कि वे कृपया खड़े हों और सम्मान स्वीकार करें. (तालियां)

मुस्लिम अमेरिकी मदद के लिए सबसे पहले आगे आनेवालों में थे-- वह भूतपूर्व पुलिस कैडेट जो सहायता देने के लिए घटनास्थल की ओर दौड़ा लेकिन तब खो गया जब उसके चारों ओर अट्टलिकाएं ढ़ह पड़ीं; वे आपात्कालिक चिकित्सीय कर्मिक जो इतने सारों को बचाकर सुरक्षित स्थल तक ले गये; वह नर्स जिसने हादसे के शिकार इतने सरे लोगों की सेवा-शुश्रुषा की; पैंटेगॉन में वह नौसैनिक अधिकारी जो भागता हुआ आग की लपटों में जा घुसा और घायलों को खींचकर सुरक्षित निकाल लाया. इस दसवीं वर्षगांठ पर, हम इन स्त्री-पुरुषों का उसके लिए सम्मान करते हैं जो वह थे- अमेरिकी हीरो.

ना ही हमें यह भूलना चाहिये कि इन पिछले दस वर्षों में हर दिन मुस्लिम अमेरिकीयों ने पुलिस और अग्निशामकों के रूप में हमारे समुदायों की हिफ़ाज़त करने में सहायता दी है, जिनमें से कुछ आज रात हमारे साथ शामिल हैं. हमारी पूरी संघीय सरकार में, वे स्वदेश को सुरक्षित रखने, ख़ुफ़िया जानकारी तथा आतंकवाद-विरोधी प्रयासों का दिशानिर्देश करने, और नागरिक अधिकारों तथा सभी अमेरिकियों की

नागरिक स्वतंत्रताओं की रक्षा में कार्यरत हैं. तो इस बारे में कोई भूल नहीं होनी चाहिये, मुस्लिम अमेरिकी हमें सुरक्षित रखने में सहायता दे रहे हैं.

हम यह देखते हैं वर्दीधारी पुरुषों और महिलाओं की साहसिक सेवा में, जिनमें हज़ारों मुस्लिम अमेरिकी शामिल हैं. युद्ध के समय में, वे स्वेच्छा से आगे आये, यह जानते हुए कि उन्हें जोखिम वाले काम पर भेजा जा सकता है. हमारे सैनिक हमारे देश के हर कोनेसे आते हैं, उनकी पृष्ठ्भूमियां और आस्थाएं अलग-अलग हैं. लेकिन हर दिन वे एकजुट होते हैं, एक साथ सफल होते हैं, एक अमेरिकी टीम की तरह.

युद्ध के दस कठिन वर्षों के दौरान, हमारे सैनिकों ने शानदर तरीके से और सम्मान के साथ सेवा की है. कुछ ने चरम बलिदान दिया है, जिनमें से एक हैं थलसेना के स्पेशलिस्ट करीम खान. 9/11 से अपने देश की सेवा करने को प्रेरित, उन्होंने ईराक में अपने प्राणों की आहूति दी और आज वह अपने साथी वीरों के साथ आर्लिंग्टन की कब्रगाह में सो रहे हैं. और हम करीम की मां अलशेबा को आज रात फिर यहां आने के लिए धन्यवाद देते हैं. (तालियां.) करीम की तरह इस पीढ़ी ने इतिहास में अपनी जगह बना ली है, और मैं आज रात यहां उपस्थित हमारी सेना के सभी सदस्यों -- 9/11 की पीढ़ी के सदस्यों -- से अनुरोध करूंगा कि वे खड़े हों और अपने साथी अमेरिकीयों का धन्यवाद स्वीकार करें (तालियां)

इस वर्ष और हर वर्ष, हमें अपने आप से यह पूछना होगा: इन देश भक्तों को हम कैसे सम्मान दें -- उन्हें जिन्होंने प्राणों की आहूति दी और उन्हें जिन्होंने देश सेवा की? स्मरण के इस मौके पर भी उत्तर वही है जो दस सितबंरों पहले था. हमें वैसा अमेरिका बनाना होगा जैसे अमेरिका के लिए वह जिये और जैसे अमेरिका के लिए वह मरे, और जैसे अमेरिका के लिए उन्होंने बलिदान दिये.

ऐसा अमेरिका जो विभिन्न पृष्ठभूमियों और आस्थाओं के लोगों को केवल बर्दाश्त नहीं करता, बल्कि ऐसा अमेरिका जो हमारी विविधता से समृद्ध होता है. ऐसा अमेरिका जहां हम एक दूसरे के साथ सम्मान और आदर के साथ व्यवहार करते हैं, यह याद रखते हुए कि यहां अमेरिका में कोई वह और कोई हम नहीं है, यहां बस हम है. ऐसा अमेरिका जहां हमारी मूलभूत स्वतंत्रताओं और अहरणीय अधिकारों को केवल बनाए ही नहीं रखा जाता, बल्कि निरंतर उनका नवीकरण किया जाता है, उन्हें तरो-ताज़ा किया जाता है -- और इन्हीं में है हर व्यक्ति का यह अधिकार कि वह जैसे चाहे पूजा-अर्चना करे. ऐसा अमेरिका जो विश्व भर के लोगों के अधिकारों और मान-मर्यादा के लिए खड़ा हो जाता है, चाहे वह मध्य-पूर्व या उत्तर अफ़्रीका में अपनी आज़ादी की मांग करने वाला युवक या युवती हो, अथवा हॉर्न ऑव अफ़्रीका में भूख से पीड़ित बच्चा, जहां हम जानें बचाने के लिए काम कर रहे हैं.

सीधे सादे शब्दों में कहें, तो हमें ऐसा अमेरिका बनाना होगा जो, हमारे से पहले वाली पीढ़ियों की तरह, एक परिवार की तरह आगे बढ़े, परीक्षा की घड़ी में एकजुट हो कर काम करे, अपने आधारभूत मूल्यों पर

अडिग रहते हुए तथा और भी शक्तिशाली बनकर उभरते हुए. हम ऐसे ही लोग हैं, और हमें हमेशा ऐसे ही बना रहना होगा.

आज रात, जब हम एक गाम्भीर्यतापूर्ण वर्षगांठ के समीप पहुंच रहे हैं, मैं अपने राष्ट्र के लिए इससे अधिक उपयुक्त कामना की कल्पना नहीं कर सकता. तो आप सब पर ईश्वर की अनुकंपा हो और संयुक्त राज्य अमेरिका पर ईश्वर की अनुकंपा हो. धन्यवाद (तालियां)

समाप्त सायं 8:43 ईडीटी

राष्ट्रपति ओबामा द्वारा व्हाइट हाउस में इफ़्तार पर अतिथियों का स्वागत.